।। अर्हम् ।।
आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)
दूरभाष : 01565–224600,224900
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

''सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र'' कृति का विमोचन
शांतिपूर्ण सहअस्तित्व से बनेगा समृद्ध राष्ट – आचार्य महाप्रज्ञ

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 21 फरवरी : विश्वविख्यात जैन संत आचार्य महाप्रज्ञ एवं मिसाईल मैन पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा संयुक्त रुप से लिखित कृति ''सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र'' का विमोचन आचार्य महाप्रज्ञ ने कस्बे के तेरापंथ भवन स्थित प्रज्ञासमवसरण में किया। प्रभात प्रकाशन द्वारा ''द फैमिली एण्ड द नेशन'' का हिन्दी अनुवाद ''सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र'' के रुप में प्रकाशित इस पुस्तक के लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि हमारा जीवन बाह्य जगत और भीतरी जगत इन दो विश्वों पर टिका है। जो लोग केवल बाह्य जगत में ही जीते हैं वे कभी सुखी नही बन सकते। जो बाह्य जगत के साथ भीतर के जगत की अनुभूति कर लेता है उसके लिए असुख, अशांति कोषों दूर हो जाती है। वर्तमान में भावों की दूनियां, भीतर की दुनियां पर ध्यान नहीं जा रहा है। केवल शब्दों का जाल बिछ रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में केवल शब्दों का जाल नही है, उसके भीतर भाव छिपे हैं। उनको पाने के लिए डूबकी लगाना सीख जाएं तो जो सत्य पाना चाहते हैं वह प्राप्त हो जायेगा।

आचार्य माहप्रज्ञ ने कहा कि जब शांतिपूर्ण सहअस्तित्व स्थापित होगा तो व्यक्ति, परिवार और राष्ट्र सुखी एवं समृद्ध बन जायेगा। उन्होने ने कहा कि पुस्तक में शब्दों के पीछे जो भाव छिपे है उनको खोज लेने से आपकी भी डॉ.कलाम जैसी स्थिति बन जायेगी। जब डॉ. कलाम पहली बार मेरे से मिले थे तब उन्होने शब्दों को नहीं पकड़ा, उनके पीछे के भावों को पकड़ा। इसलिए वे मेरे इतने अभिन्न बन गये। उन्होने प्रभात प्रकाशन के निर्देशक डॉ.पीयूष कुमार के व्यवहार की सराहना करते हुए कहा कि डॉ. पीयूष में विनम्रता, शालीनता एवं सत्य के प्रति जिज्ञासा है। मुझे ऐसा ही व्यक्ति पसंद है। चाहे राजनेता हो, पत्रकार हो, या साहित्यकार हो अगर वह उदंड है तो उससे ज्यादा बात करना पसंद नहीं करता।

250 पुस्तकों का लेखन कर चुके आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने लेखन के रहस्यों पर से पर्दा उठाते हुए कहा कि जो अचिंतन से, अशब्द से लिखता हूं वह साहित्य बन जाता है। उन्होने स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ अर्थव्यवस्था से स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण की चर्चा भी की। युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि देश में भौतिक विकास हुआ है पर अब भी स्थिति अच्छी नहीं है। हमने यात्रा में बड़ी–बड़ी अटालिकाओं में रहने वालों को देखा है तो फुटपात पर रहने वाले गरीब लोगो को भी देखा है। राष्ट्र की सच्ची तस्वीर हमारे सामने है। उन्होने कहा कि भौतिक विकास के साथ आध्यात्मिक विकास भी जरुरी है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि अहिंसा, सहिष्णुता, प्रेम, विश्वास के द्वारा परिवार सुखी और राष्ट्र समृद्ध हो जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रस्तुत कृति में इन आध्यात्मिक सूत्रों की चर्चा कर विकास की नई दिशा का प्रस्फुट न किया है। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि कुछ प्रवचनकार होते हैं पर लेखक नहीं होते और कुछ लेखक होते हैं पर प्रवचनकार नहीं होते। आचार्य महाप्रज्ञ लेखक और प्रवचनकार दोनों है। इनके

क्रमश : 3

प्रवचनों को सुनने के लिए हजारों लोग ललायित रहते हैं। आचार्यश्री को सुनना लोगों ने जीवन का अंग बना लिया है। उन्होने ''महाप्रज्ञ ने कहा'' सीरीज के 37 भागों के प्रकाशित होने की जानकारी देते हुए कहा कि इन पुस्तकों में आचार्यप्रवर द्वारा प्रतिदिन दिये जाने वाले प्रवचनों को समाहित किया गया है। आचार्य महाप्रज्ञ की अनेक पुस्तकों का संपादन करने वाली मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि आचार्यश्री न प्रवचन से पहले चिंतन करते है और न ही लेखन से पहले। उनके भीतर से जो निकलता है वही प्रवचन होता है और वही साहित्य बन जाता है। भीतर की बात ही लोगों को प्रकाशित करती है। प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार ने डॉ.कलाम के द्वारा पुस्तक के उद्‌भव के सन्दर्भ में लिखे विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा डॉ. कलाम को शांति मिसाईल के निर्माण के इंगित को लक्ष्य रखकर ही इस पुस्तक का लेखन किया गया है। यह पुस्तक उस नई टेक्नोलॉजी के निर्माण की तरफ बढ़ने का प्रथम कदम है। मुनि धनन्जय कुमार ने मार्च टू विक्ट्री पुस्तक के सन्दर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य शाश्वत का संगीत है। इसमें ऊंचाई भी है और गहराई भी है। मुनि अक्षयप्रकाश ने अनेकान्तः फिलोसॉफी ऑफ को एक्जीटेंस् पुस्तक के बारे में विचार रखे। समारोह में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया ने स्वागत भाषण दिया। जैन विश्व भारती के मंत्री भीखमचंद पुगलिया ने प्रभात प्रकाशन का परिचय प्रस्तुत किया। प्रकाशन के निर्देशक डॉ. पीयूष कुमार ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के विचार नई रोशनी देने वाले है, नई प्रेरणा देने वाले है। इस मौके पर जैन विश्व भारती के चीफ ट्रस्टी रणजीत सिंह कोठारी का सम्मान अनिल दुगड़ ने किया। इस मौके पर जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया ने प्रभात प्रकाशन के निर्देशक डॉ.पीयूष को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. बच्छराज दुगड़ ने किया।

अपनी कृति के लोकार्पण पर डॉ. कलाम ने भेजा लिखित संदेश

समारोह में डॉ.ए.पी.जे.कलाम द्वारा लिखित में प्रेषित संदेश का वाचन जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष सुमेरमल सुराणा ने दिया। डॉ.कलाम ने अपने शब्दों में कहा कि मुझे बहुत खुशी हो रही है कि 'सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र' पुस्तक का विमोचन दिनांक 21 फरवरी 2010 को होने जा रहा है। इस पुस्तक को परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी के साथ लिखते हुए मुझे बहुत आनंद प्राप्त हुआ। आचार्य महाप्रज्ञ जी ज्ञान के अजस्र स्रोत हैं। उन्होने कहा विश्व में हजारो संख्या में परमाणु अस्त्र बढ़ रहे हैं और मुझे आदेश दिया कि ऐसी शांति की मिसाईल विकसित करें जिससे ये परमाणु अस्त्र निष्प्रभावी हो जायें। इस आदेश को पाकर मैंने विचार किया कि एक उत्तम राष्ट्र निर्माण कैसे किया जाये ? फिर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इसके बीज परिवार में बोये जा सकते हैं। परिवार का पालन पोषण करते समय बच्चों को उचित मूल्यों कि शिक्षा देना बहुत आवश्यक है। यदि प्रत्येक नागरिक इसका पालन करें, सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र के सृजन होने में कोई शंका नहीं है। यह पुस्तक इन्हीं विचारों पर आधारित है। मुझे विश्वास है कि भारत के नागरीक इसको पढ़कर आनंद उठाएंगे और एक नये राष्ट्र के निर्माण के लिये प्रेरित होंगे।

'सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र' पुस्तक का विमोचन के समारोह की सफलता के लिये मेरी हार्दिक मंगलकामनाएं एवं सभी पाठकों को मेरी शुभकामनाएं।

55 वर्ष पूर्व लिखित ''मार्च टू विक्ट्री'' का विमोचन

समारोह में आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा 55 वर्ष पूर्व रचित काव्य संग्रह ''विजय यात्रा'' का अंग्रेजी संस्करण ''मार्च ऑफ विक्ट्री'' का विमोचन भी किया गया। इस पुस्तक की कविताओं ने जनमानस को झंकझौरा है और चिंतन को नया मोड़ देने में कामयाब हुई है। इस कृति का प्रकाशन भी प्रभात प्रकाशन के द्वारा किया गया है। इसकी प्रथम प्रति विमोचन हेतु रणजीतसिंह कोठारी ने आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट की। इसी समारोह में जैन

विश्व भारती द्वारा प्रकाशित आचार्य महाप्रज्ञ की एक अन्य कृति अनेकांतः फिलोसॉफी ऑफ को.एक्जीस्टेंस का विमोचन भी हुआ। इसकी प्रथम प्रति जैन विश्व भारती के ट्रस्टी पन्नालाल बैद ने आचार्यप्रवर को भेंट की।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक